जल स्रोत बढ़ाओ

डॉ. राम सहाय बरैया

जल स्रोत बढ़ाओ

जंगलों की
इस तरह की गई
अंधा-धुन्ध कटाई।
कि-जल के सारे स्रोत
हो गये बंद।
जिससे आदमी ही नहीं,
अपितु पशु-पक्षी की भी
सुख-शांति में पड़ गई है
खटाई।
जीव-जन्तु की कई प्रजातियां
हो गई समाप्त।
देखिये!
फिर भी हम, सो रहे हैं,
और भविष्य के लिये
सूखा, अकाल, रेगिस्तान के कांटे
बो रहे हैं।
जागो! जागो!
फिर से खगकुल को बुलाओ।
पेड़ लगाकर,
जल का स्रोत बढ़ाओ।

पानी न बहाओ

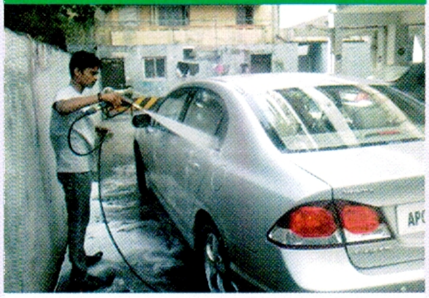

पचास साल की उम्र में भी,
भाभी की समझ में,
नहीं आया।
घर-आंगन धोने के बाद
उन्होंने कार को नहलाया।
इतना ही नहीं-
सड़क पर पड़ी धूल को
झाड़ू की बजाय,
पीने के अमृत तुल्य जल से
लेजम लगाकर दूसरे के दरवाजों तक बहाया
जब मुझ से नहीं गया रहा,
तब मैंने कहा-"भाभी जी
जल बहुत कीमती है
इस तरह न बहाओ।
जल चिंतक/वैज्ञानिक बार-बार
चेतावनी दे रहे हैं कि-
विश्व में जल संकट आ रहा है,
पृथ्वी का जल स्तर नीचे जा रहा है।"
फिर भाभी बोली-ज्ञानी देवर जी
कुछ जल-संरक्षण के उपाय भी बताओ।
बातों से काम नहीं चलाओ।"
मैंने कहा-देर मत करो,
नर्सरी से पौध लाओ।
द्वार-द्वार उन्हें लगवाओ।
और अच्छी तरह देखभाल कराओ।
जब पेड़ बढ़े होंगे।
तब छाया और फल देंगे।
हम सभी तथा पशु पक्षी
सुख-शांति तथा आनंद लेंगे
बादल आयेंगे, खूब सारा जल बरसायेंगे।
पेड़ों के नीचे रहता है बहुत-सा पानी।
इसलिए हम सब को नहीं होगी,
पीने के जल की हैरानी।

गीत

बाबुल द्वार पे पेड़ लगाओ,
हम सब खेलेंगे छाया में।
बाबुल आज नर्सरी जाओ,
वहां से पौध नीम की लाओ।
खुशी से रोपो उसे द्वार पर,
इससे रोग न हो काया में।
हम सब खेलेंगे छाया में।।1।।
पेड़ की करेंगे हम रखवाली,
उसमें आयेगी हरयाली।
उसको देंगे खाद और पानी,
हम सब खेलेंगे छाया में।
हम सब खेलेंगे छाया में।।2।।
अम्मा जब आयेगा सावन,
अपना लगेगा द्वार सुहावन।
झूले गिरेंगे तब डालो में,
मां क्यों पड़ी मोह-माया में।
हम सब खेलेंगे छाया में।।3।।
नीम का पेड़ बहुत उपयोगी,
ऐसा कहते डॉक्टर, योगी।
नीम की खली लाभकारी है,
खाद रूप में अजवाया मैं।
हम सब खेलेंगे छाया में।।4।।
ऊंचे पेड़ बुलाते बादल,
बादल-मामा बरसाते जल।
जो वृक्षों की सेवा करता,
रहता सुखी छत्र-छाया में।
हम सब खेलेंगे छाया में।।5।।

संपर्क करें
डॉ. राम सहाय बरैया
35, पंचशील नगर, मेला ग्राउण्ड,
पोस्ट-आर.के. पूरी, ग्वालियर
पिन-474011 (म.प्र.)
मो. 9009850298